2017-18

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly - Nov. 2017-Apr. 2018
Issue-X Vol II , Feb. 2018
UGC Approved Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

वैदिकवाङ्मय में यज्ञचिकित्सा : (यज्ञौपेथी)

प्रा. भारती एस. आर

एम. ए. नेट (संस्कृत), योग,आयुर्वेद एवं निसर्गोपचार विशेषज्ञ, जवाहर महाविदयालय अणदुर
ता. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद

'पर्यावरण की यथा स्थिति प्राणीमात्र के लिये ही नहीं वरन् समस्त विश्व के अस्तित्व रक्षार्थ आवश्यक है। पर्यावरण हमारा भगवान है क्योंकि भगवान शब्द का निर्माण प्रकृति के पांच महाभूतो के नाम पर है। जैसे भ=भूमि, ग-गगन, व वायु, अ=अग्नि, न-नीर। यज्ञों के द्वारा प्रकृति में भैषज्य (औषध) तत्वों को भरा जाता है, जिससे पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगंधिमय होता है।

यज्ञों में अग्निहोत्र महत्वपूर्ण माना गया है। मुखं वा एतद्यज्ञानां यदग्निहोत्रम्। (शतपथ ब्रा. 14.3.20.02)

हवन से रोग निवारण
ऋषियों के वो जमाने इकबार फिर से आ जा
पावों पहूँ मैं तेरे अपनी झलक दिखा जा ।।
हर घर में यज्ञ होवे सुख शान्ति देने वाला ।।
पर्यावरण का पोषक सुस्वास्थ्य देने वाला ।।

अग्निहोत्र वेदों का प्राण है ! वेद केवल भारत के ही नहीं अपितु विश्व के सर्व प्रथम ग्रन्थ हैं. इस सत्य को पाश्चात्य विदवानों ने भी स्वीकार किया है:

Rigved is the oldest book in the world Library आजकल से मानव त्रस्त है ! हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस प्रकार की व्याधियों के निवारणार्थ अग्निहोत्र को सर्वोत्तम उपाय बतलाते हुए कहा है:

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' (शतपथ ब्राहमण) अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठ कर्म है !

अग्निहोत्र के लिऐ औषधीय गुण युक्त विशिष्ठ वृक्षों की सूखी लड़कियों का चयन किया जाता है. जैसे:- चन्दन, वट वृक्ष आम, गुलर, पीपल तथा अन्य क्षीरी वृक्ष की समिधा कहा जाता है ! विविध वनस्पतियों जड़ी बूटियों के सूखे, पुष्पों फलो, पतों, को सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है. जैसे- पलाश पुष्प, बिल्वपत्र बिल्व फल, धन्वन्तरि, गेंदापुष्प, तुलसी, माका, गिलोय, अश्वगंधा, गुलाबपुष्प, मालती पुष्प पत्र, सूखे मेवे आदि. उसी के साथ शुध्द गोघृत भी डाला जाता है !

राष्ट्रीय वानस्पत्यनुसन्धान संस्था – (NBRI) के वैज्ञानिकों ने यज्ञ हवन – अग्निहोत्र इस विषय में अनुसन्धान करके यह निष्कर्ष निकाला है In the bid to study the actual impact of havans an indoor study was carried out the NBRI team including prof Nautugal, mr-Puneet Singh chauhan a fellow of Asian agri - history Foundation Yashwant Laxman Nene Their opinion is as follows:

Copyright © Shaurya Publication, Latur | www.rjorunals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

"After the experiment, it was observed that though there was no reduction in the number of bacteria by burning of wood alone, smoke emanating from herbs led to over 94 percent reduction in aerial bacteria" Absence of pathogenic bacteria in the open room even after the 30 days was indication of the bacterial potential of the medicinal smoke treatment."

ओं नमो वृक्षेभ्यो यथेयं पृथिवी देवभूतान् गर्भे दधास्ति वै। तथेमं वृक्षक दध्यात्वां (ऋग्वेद).
क्षितिजा भवन्तु शं नो ।।

we pray to all the Trees. All the living beings are a produced from the Earth. Trees are also a part of living being

O God please protect all the trees, let all the trees be beneficial to us.

अग्निहोत्र का आध्यात्मिक पक्ष

The main purpose of havan is for the purification of our surroundings. It is person's duty to thank nature for balancing our surroundings and making them fit human existence.

Meditation and prayers are port at haven or good karma. Respect and humbleness is also considered part of good karma, which purifies your heart. Concentration of the mind gives power for self-realization.

वह कौन है जगत में जो सुख नहीं चाहता?
वह कौन है धरा पर जो शान्ति नहीं चाहता?
वह कौन है संसार में जो आरोग्य नहीं चाहता?
वह कौन है विश्व में जो आनन्द नहीं चाहता?

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।। यह प्रार्थना सभी करते हैं उसे सार्थक बनाने हेतु आज नही तो कल अग्निहोत्र अवश्य करना होगा।

सुख, शान्ति और आनन्द का आधार है समन्वय। समन्वय के सिद्धांत पर ही आयुर्वेद आधारित है।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कम्....॥ अथर्ववेद 3/11/1

यहां कुशल चिकित्सक की घोषणा है कि हे रोगी ! तुम्हें सुखपूर्वक जीने के लिये होम द्वारा रोग बन्धनों से मुक्त करता हूँ।

यज्ञशाला के वातावरण में रोग निरोधक तत्व प्रचूर मात्रा में रहते हैं, जो उधर बैठते हैं उनके रोमछिद्रों में होकर वह ऊर्जा भीतर प्रवेश करती है और जहाँ भी विजातीय, अनुपयुक्त है उसे निरस्त करती है। यज्ञोपैथी अर्थात् यज्ञ चिकित्सा महत्वपूर्ण उपचार पद्धति है, जिससे शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों को भी जड़ से काटा जा सकता है। व्याधियाँ केवल शारीरिक रोग के रूप में ही नहीं आतीं वरन् वे आध्यात्मिक - आधिभौतिक - आधिदैविक कारण एवं स्वरूप वाली होती हैं , प्रारब्धजन्य या दुष्कृतों के फलस्वरूप न केवल रोग अपितु अन्य प्रकार के संकट भी उत्पन्न होते हैं, उनके निराकरण में यज्ञोपैथी जितनी फलप्रद सिद्ध होती है उतनी और कोई पैथी नहीं। यज्ञ से पर्यावरण की पुष्टि, विश्वव्यापी प्रदूषण की निवृत्ति तथा प्राणीमात्र की दैहिक-दैविक-भौतिक चिकित्सा की जा सकती है। रोग निवारक हवन के लिये तांबे या मिट्टी के पिरामिड आकार के कुण्ड में दूधवाले वृक्ष की समिधाओं (पीपल, बड़, आम, गूलर, पलाश, बेल, शमी, में से

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

किसी एक दो की सूखी लकड़ियों अथवा गायगोबर के कन्डे में कपूर से अग्नि जलाकर गोघृत एवं सुगन्धित व रोगनाशक जड़ी बूटियों की हवन सामग्री की आहुतियां सूर्योदय या सूर्यास्त के समय रोगनिवारक मंत्रों से दी जाती है।

"सर्वशरीर रोगनाशोपदेशः" अर्थात्

1. अथर्ववेद के भाष्यकार पं क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने सूक्त के प्रारंभ में शीर्षक लिखा है :- समस्त शरीर के रोगों के नाश का उपदेश।

2. ऋग्वेदीय छः मन्त्रों तथा अथर्ववेदीय तीसरे से सातवें मंत्रों अर्थात् 11 मंत्रों के अंतिम चरण में है विवृहामि ते = तेरे रोग को दूर करता हूँ।

3. अथर्ववेद 9/8 के प्रारंभिक पांच मन्त्रों में दूसरी पंक्ति है :-

(क) "सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे" एवं मन्त्र 6 से 9 में बहिर्निर्मन्त्रयामहे अर्थात् तेरे समस्त शरीर के रोग को बाहर निकालते है, फटकारते हैं

(ख) मंत्र संख्या 10,11,12,19,20 में दूसरी पंक्ति है :
"यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् अर्थात समस्त रोगों के जहर को तुझसे निकालता हूं, अलग करता हूं

(ग) मन्त्र संख्या 13 से 18 की दूसरी पंक्ति है:
"अहिसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्"
अर्थात् वे महापीड़ायें कष्ट न देती हुई रोगों को न बढ़ाती हुई छिद्र से बाहर निकल जावें।

4. इन मंत्रों की शेष पंक्तियों में शरीर के अंगों तथा रोगों के नाम उल्लिखित हैं।

ऋग्वेदीय मंत्र [10/163)

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते॥1॥

हे रोगी! मैं वैद्य तेरी आँखों, नासिका,कानों और ठोड़ी से रोग दूर करता हूँ, जो शीर्षस्थ रोग हैं उसे भी मस्तिष्क और तेरी जिह्वा से दूर करता हूँ।॥।।

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्य: कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहु भ्यांवि वृहामि ते॥2॥

हे रोगिन् ! तेरी गर्दन की नाड़ियों, ऊर्ध्व धमनियों हड्डियों और संधि (जोड़) से रोग को दूर करता हूँ तथा हाँथों में स्थित यक्ष्म को कन्धों से और बाहु ओंसे दूर करता हूं॥२॥

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोहृदयादधि।
अक्ष्मं मतस्नाभ्यां यवनः प्लाशिभ्यो वि वहामि ते॥3॥

हे रोगी! तेरी आंतों, गुदाओं, स्थूल आंत, हृदय, दोनों गुर्दों, यकृत और तिल्ली आदि यन्त्रों से यक्ष्म रोग को दूर करता हूँ॥3॥

ऊरूभ्यां ते अष्ठीवद्भया पाणिभ्यां प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदानंससो वि वृहामि ते॥4॥

हे रोगिन। तेरी जंघाओं, विशेष अस्थि वाले पैरों, एड़ियों पंजो, नितम्बभागों, कटिभागस्थ, उपस्थ प्रदेश से रोग को दूर करता ॥४॥

मेहनादनंकरणाल्लोमभयस्ते नखेभयः।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते।।5।।

मूत्र लाने वाले मूत्रेन्द्रिय, लोमों, नखों और समस्त शरीर से इस यक्ष्म रोग को दूर करता हूँ ॥5॥

अङ्गद गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते।6॥

हे रोगिन्! अंग-अंग से, लोम-लोम से और पोर-पोर में उत्पन्न उस यक्ष्मा को समस्त शरीर से दूर करता हूँ।।6।।

अथर्ववेद {2/33/3से7]

हृदयात् ते परि क्लोम्नो हलीक्षणात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीहो यकनस्ते वि वृहामसि ॥3॥

तेरे हृदय से, क्लोम (फेफड़ो) से, तथा श्वास की नाली से, पसलियों से, गुर्दे से, तिल्ली से, यकृत (जिगर) से, तेरे रोग को दूर करता हूँ।।3।।

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि
यक्ष कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते।4॥

तेरी आंतों से, गुदा की नाड़ियों से, कोलन (भीतरी मल स्थान) से, उदर में से, तेरी दोनो कोखों से, कोख की थैली से, और नाभि से रोग को उखाड़े देता हूँ ।।4।।

उरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पाणिभ्यां प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणि भ्यां भासदं भंससो वहामि ते ॥5॥

तेरी दोनो जंघाओं से, दोनो घुटनों से, दोनो एड़ियों से, दोनों पैरों के पंजों से, तेरे दोनों कूल्हों व नितम्बों से और गुह्य स्थान से कमर और गुप्त स्थानों में हुए रोग को दूर करता हूँ ।।5।।

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ।।6।।

तेरी हड्डियों से, मज्जा धातु (अस्थि के भीतर के रस) से, पठान और नाड़ियों से और तेरे दोनों हाथों से, अंगुलियों से और नखों से रोग को मै जड़ से दूर करता हूँ ।।6।।

अङ्गे अंङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्च विवृहामसि।।7।।

जो रोग तेरे अंग-अंग में, रोम-रोम में, गांठ-गांठ में है। हम तेरे त्वचा के और सब अवयवों में व्यापक रोग को ज्ञान दृष्टि वाले विद्वान के विविध उद्योग से जड़ से उखाड़ते हैं 7।

अथर्ववेद {9/8}

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् ।
सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।1।।

मस्तकशूल, कर्णशूल और विलोहित (पाण्डूरोग) - इन सभी रोगों को हम आपसे दूर करते हैं।।1।।

कर्णाभ्यां ते कंकृषेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम्।
सर्व शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।2।।

आपके कानों और कानों के भीतरी भाग से कर्णशूल और विसल्पक (विशेष कष्ट देने वाले) रोग को हम दूर करते हैं तथा सभी शीर्ष रोगों को हमआपसे दूर करते हैं ।।2।।

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आसीत्: ।

Copyright © Shaurya Publication, Latur | www.rjorunals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

सर्वशीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे ॥3॥

जिसके कारण यक्ष्मा रोग कान और मुख से बहता है, उन (सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे बाहर करते हैं |

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरूषम् ॥

सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।4।।

जो रोग मनुष्य को बहरा और अन्धा कर देते हैं, उन शीर्ष रोगों को हम आपसे दूर हटाते हैं।।4।।

अंङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्गयं विसल्पकम्।

सर्व शीर्षण्यं ते रोग बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।5।।

अंग भंजक, अंग ज्वर, अंग पीड़क, विश्वाङ्गय रोग तथा सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे दूर करते हैं। 15 ।।

यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पौरुषम् ।

तक्मानं विश्वशारद बहिर्निर्मन्त्रयामहे॥6॥

जिसका भयंकर उद्वेग (प्रतीकाश) मनुष्य को कम्पायमान कर देता है उस शरत्कालीन ज्वर को हम आपसे बाहर करते हैं।।6।।

य ऊरू अनुसर्पत्यथो एति गवीनिके।

यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे।।7।|

जो रोग जंघाओं की ओर बढ़ता है और गवीनिका नाड़ियों में पहुंचजाता है उस यक्ष्मा रोग को आपके भीतरी अंगों से हम बाहर निकालते हैं। 17।।

यदि कामादपकामादहृदयाज्यायते परि।

यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ॥8॥

जो इच्छाकृत कार्यों अथवा बिना कामना से हृदय के समीप उन्पन्न होता है उस कफ को हृदय और अन्य अंगों से हम बाहर निकालते हैं। 8 ।।

हरिमाणं ते अंगेभ्योऽप्वामन्तरोदरात् ।

यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ॥9॥

हम आपके अंगों से हरिमा (रक्तहीनता) रोग को, पेट के भीतर से जलोदर रोग को और शरीर के भीतर से यक्ष्मारोग को धारण करने वाली स्थिति को बाहर करते हैं। ।9।।

उदरात् ते क्लोनो नाभ्या हृदयादि।

यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत 12।।

हम आपके पेट, "क्लोम" (फेफड़ों), नाभि और हृदय से सभी रोगों के विषरूप विकारों को शरीर से बाहर निकालते हैं।।11211

ये अङ्गानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् | 19।।

यक्ष्मा रोग को दूर करने वाली और अंगों पर मांस की वृद्धि रने वाली जो औषधियां आपके अंगों को आनन्दित करती है, उनसे सभी यक्ष्मा रोग के विष-विकारों को हम आपसे दूर करते हैं।।1।।

विसल्पस्य विद्रधस्य वातीकारस्य वालजेः |

यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।2011

विसल्प (पीड़ा), विद्रधि (सूजन), वात कार (वात रोग) और अलजि इन सभी रोगो के विष को हम आपके शरीर से, मन्त्र प्रयोग से दूर हटाते हैं।।20।।

सं ते शीर्णः कपालानि हृदयस्य च यो विदुः। .

Principal
Jawahar Arts. Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्णो रोगमनीनशोंगभेदमशीशमः।।22||

आपके सिर पर उदय होते सूर्य देव ने अपनी किरणों से रोग को विनष्ट किया है और चन्द्रदेवआपके कपाल भाग तथा हृदय के अंग भेद को शान्त कर देते हैं।।22।।

सर्व रोगनाशक हवन सामग्री -

1. अडूसा. वासा, वृष, अरुसा,. कफनिसारक, रक्तपित्तनाशक
   बसौटा, Adhatoda क्षयनाशक
2. आंवला. आमलकी, धात्रीफल. आयुवर्ध्दक, नेत्र विकारनाशक
3. आम के पत्ते. आम्रपर्ण. रक्तविकार तथा प्रमेहनाशक
   Mango Leeves खांसी एवं ज्वरनाशक
4. उड़द. माष, रथजिता बलधारक बवासीर नाशक
5. इलायची. दिव्यगंधा,कांता, वृहदेला. दुर्गंधनाशक, मूत्ररोगनाशक
6. काजू. काजूत, बादामे फिरंगी. वातनाशक, पौष्टिक, वाजीकारक
7. खोपरा. नारियल, coconut. शीतल पौष्टिक रक्तविकार नाशक
8. चावल. तंडुल, rice. पेचिनाशक बुद्धिवर्धक
9. जामुन. जम्बू, काला जाम. गुठली, मधुमेहनाशक
10. जायफल. जातीफल Nutmeg. कृमिनाशक वातनाशक.

संदर्भग्रंथ सूचिः-

1.ऋग्वेद
2.यजुर्वेद
3.अथर्ववेद
4.यज्ञोपैथी -डॉ. कमल नारायण
5.अग्निहोत्र एक अवलोकन – डॉ.धर्मेन्द्र कुमार जी
6. सत्यार्थ प्रकाश – महर्षि दयानंद सरस्वती
7. अग्निहोत्र का स्वानुभव – डॉ. सुरेखा राजेंद्र भारती

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad